पाठ-16

दीये का अभिमान

आइए सीखें : ● कविता को लय के साथ गाना और उसके अर्थ को भाव सहित समझना ● नम्रता और विनयशीलता का महत्व ● समानार्थी शब्दों को जानना ● श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्द ● शुद्ध वर्तनी।

जलते-जलते दीये को यह,
हो गया अभिमान।
लगा सोचने सूर्य चन्द्र से,
भी मैं अधिक महान।

सूरज तो करता है आकर,
दिन में सिर्फ प्रकाश।
किन्तु रात के अंधकार का,
मैं ही करता नाश।

इतने ही में लगा हवा का,
हल्का झोंका एक।
सिर नीचा हो गया, बुझ गया,
रही धुएँ की रेख।

अहंकार का सदा जगत में,
होता दुष्परिणाम।
करो बिना अभिमान तुम्हें जो,
कुछ करना हो काम।

– द्वारिका प्रसाद महेश्वरी

शिक्षण-संकेत: ■ कविता को लय ताल के साथ स्वयं पढ़कर सुनाएँ। ■ सिर नीचा हो गया जैसे वाक्यों का भाव स्पष्ट करें। दीये के महत्व को समझाएँ। ■ उन प्रसंगों / कथाओं को बताएँ, जिनमें अहंकार के कारण बुरे परिणाम भोगना पड़े।

शब्दार्थ

प्रकाश	–	रोशनी, उजाला	**अंधकार**	–	अंधेरा,
अभिमान	–	घमण्ड, अहंकार	**चन्द्र**	–	चन्द्रमा
महान	–	बड़ा	**सिर्फ**	–	केवल
जगत	–	संसार	**दुष्परिणाम**	–	बुरा नतीजा

अभ्यास

बोध प्रश्न

1 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

(क) जलते-जलते दीये को क्या हो गया?

(ख) दीया अपने मन में क्या सोचने लगा?

(ग) हवा का झोंका लगने पर क्या हुआ?

(घ) अहंकार का क्या परिणाम होता है?

(ङ) हमें अपना कार्य किस भाव से करना चाहिए?

2 रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

(क) जलते-जलते ..... को यह
हो गया .....।

(ख) सूरज तो करता है आकर
दिन में .....।

(ग) सिर नीचा हो गया .....
रही धुएँ की .....।

(घ) करो बिना ..... तुम्हें
जो कुछ करना हो .....।

भाषा अध्ययन

1. कविता के आधार पर समान ध्वनि वाले शब्द लिखिए-

अभिमान ..... दुष्परिणाम .....

प्रकाश ..... एक .....

2. निम्नलिखित शब्दों में से सही शब्द पर गोला लगाइए ।

(क) अभीमान, अभिमत, अभिमान

(ख) अंहकार, अहंकार, अहकांर

(ग) सूर्य, सुर्य, सूंय

(घ) दूष्परिणाम, दुष्परिनाम, दुष्परिणाम

ध्यान से पढ़िए -

ओर - और शब्दों में मात्रा बदलने से अर्थ भी बदल गया है।

3. निम्नलिखित शब्दों का वाक्य प्रयोग कीजिए -

पिता - .....

पीता - .....

दिया - .....

दीया - .....

योग्यता विस्तार

- दीपक, सूर्य-चन्द्र आदि से सम्बन्धित कविता खोजकर कक्षा में सुनाइए।
- शिक्षक की सहायता से घमंड के दुष्परिणामों से सम्बन्धित कोई अन्य कहानी सुनिए और सुनाइए।